प्रकाशक की ओर से

भारत और अमेरिका में शिक्षाविद और विद्वान वैश्विक होती अर्थव्यवस्था में प्रभावी लोग तैयार करने की छात्रों और रोजगारदाताओं की मांग को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। जिन विश्वविद्यालय परिसरों को हम चिंतन-मनन और विद्वतापूर्ण चर्चाओं के लिए मरुभूमि में शांत उद्यान के तौर पर देखते थे, वे अब गंभीरता के साथ विचारों के विश्व बाज़ार में अपनी रणनीतियों की समीक्षा कर रहे हैं।

पुस्तकालय, बौद्धिक गोष्ठियां और कॉफी शॉप खत्म नहीं होने वाले हैं, बल्कि बौद्धिक केंद्र सीमाओं और समय के परे सहयोग स्थापित करने के नए तरीके तलाश रहे हैं। इससे नई तरह की भागीदारियां बन रही हैं जो समकालीन शिक्षा के स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही हैं। विश्व स्तर पर संपर्क में इसका असर जबर्दस्त होगा। लोगों को अपनी ज़िंदगी बेहतर बनाने के ढेरों अवसर मिलेंगे और साथ ही उन्हें अपने परिवारों, समुदायों और राष्ट्रों के कल्याण के भी अवसर मिलेंगे।

भारत के युवा नए विश्व ज्ञान बाज़ार से लाभ उठाने के लिहाज से अच्छी स्थिति में हैं। उच्च अध्ययन के लिए अपने छात्रों को विदेश भेजने में भारत अन्य देशों से आगे है। भारत से उच्च अध्ययन के लिए बाहर जाने वाले 123,000 छात्रों में से 60 फ़ीसदी अमेरिका जाते हैं। दुनिया के किसी भी अन्य देश की अपेक्षा अमेरिका ज़्यादा भारतीय छात्रों का स्वागत करता है।

हमने स्पैन के इस वार्षिक ''शिक्षा अंक'' के लगभग आधे से ज़्यादा हिस्से को इन छात्रों और उनके माता-पिता को जानकारी उपलब्ध कराने के लिए दिया है। इसमें हाल ही में अमेरिका से ग्रेजुएट होने वाले छात्रों के अनुभव, सही शिक्षा संस्थान का चुनाव, वीज़ा के बारे में सलाह, अमेरिका जाने पर क्या ले जाएं, आवास के लिए क्या करें और शोध सुविधाओं का इस्तेमाल कैसे करें, विषयों पर सामग्री शामिल है।

भारत में 54 फ़ीसदी जनसंख्या 25 साल से कम उम्र की है और उनकी आकांक्षाओं को उच्च शिक्षा के बिना पूरा नहीं किया जा सकता। हर कोई बाहर जाकर पढ़ाई करने का खर्च नहीं उठा सकता। लेकिन अमेरिकी सर्वश्रेष्ठ शिक्षा के अवसरों को यहां लाने के लिए भारत के शिक्षा संस्थानों के साथ उत्सुकता के साथ सहयोग कर रहे हैं। ऐसा शैक्षिक परिसर विकसित करने, शिक्षकों और छात्रों के आदान-प्रदान, और कृषि, बीमारियों के इलाज और अंतरिक्ष की खोज जैसे विविध विषयों में संयुक्त रूप से शोध के लिए किया जा रहा है।

हमारे मुख्य आलेख ''अमेरिकी-भारत उच्च शिक्षा'' में सेबास्तियन जॉन ने भारत और अमेरिकी संस्थानों और वैयक्तिक स्तर पर विद्वानों और शोधकर्मियों में हो रहे सहयोग के कुछ प्रयासों की चर्चा की है। इसके साथ ही कुछ उन सपनों का भी जिक्र किया है जिन पर अभी अमल नहीं हो पाया है।

हमारे आमुख पृष्ठ पर सीखने और बौद्धिक उपलब्धि के दौरान आने वाले आनंद के क्षण को फोटो में उतारा गया है। हम सब अपनी युवा अवस्था के अनुभवों में यह सब याद कर सकते हैं। इसमें बेंगलूर के एक स्कूल की दो छात्राएं हैं जो कंप्यूटर पर काम करना सीख रही हैं। ये लड़कियां अपने परिवार के सपनों के परे शिक्षा के नए संसार का अनुभव कर रही हैं। ऐसा उन भारतीयों और अमेरिकियों के सहयोग से हो रहा है जो सभी के लिए सर्वश्रेष्ठ शिक्षा उपलब्ध कराने के प्रयास में जुटे हैं। ग्रामीण भारत में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने और बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए रेडियो, टीवी और कंप्यूटर के इस्तेमाल के बारे में ऋचा वर्मा का आलेख महात्मा गांधी की दृष्टि को प्रतिबिंबित करता है, ''शिक्षा में निवेशित धन से लोगों को दस गुना लाभ मिलता है, जैसे कि अच्छी मिट्टी में बोए बीज अच्छी फसल देते हैं।''

हम इससे सहमत हैं और उम्मीद है कि आप भी यही मानते होंगे।